Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 172-177

कौशल विकास का प्रवास पर प्रभाव का आर्थिक विश्लेषणः झुंझुनू जिले के विशेष संदर्भ में

शेरसिंह[1]* एवं डॉ. श्वेता[2]

[1]पीएच.डी. शोधार्थी, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान।

*Corresponding Author: sschhapunia@gmail.com

Citation: *शेरसिंह एवं श्वेता. (2025). कौशल विकास का प्रवास पर प्रभाव का आर्थिक विश्लेषणः झुंझुनू जिले के विशेष संदर्भ में. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 172-177.*

सार

आदि मानव से लेकर वर्तमान मानव जीवन की विकास अवस्था का अध्ययन करने से ज्ञात होता है, कि मनुष्य का जीवन संघर्षो से होकर गुजरा है। मनुष्य अपनी आव यकताओं को पूरा करने के लिए निरन्तर संघर्ष करता आ रहा है, तथा अपनी आव यकताओं की पूर्ति हेतु वह नित नवीन आविष्कारों का सृजन करता है। नये–नये प्रयोगों द्वारा वह अपने कार्यों में निपुणता लाता है। इसलिए कहा भी गया है कि ''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी हैं।'' आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही मनुष्य द्वारा नवप्रवर्तन किये जाते हैं। आदिम मानव ने भोजन पकाने के लिए आग, आवास के लिए प्रकृति प्रदत्त गुफाओं, सुरक्षा के लिए तीर कमान जैसे आवश्यक उपकरणों का आविष्कार किया। ये आविष्कार मानव की कार्यकुशलता का ही प्रमाण है। आदिम समाज का ये कौशल केवल मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति तक ही सीमित था।

शब्दकोशः *कौशल विकास, मानव जीवन, नवीन आविष्कार, आदिम समाज।*

प्रस्तावना

स्पष्ट है कि आज वैश्वीकरण के युग में प्रत्येक व्यक्ति को परिवर्तनशील वातावरण के अनुसार अपने आप को समायोजित करना होता है। इस हेतु कौशल निर्माण अति आवश्यक हैं। अर्थव्यवस्था के कृषि, उद्योग, विनिर्माण, निर्यात, व्यापार, सेवा आदि क्षेत्रों में सुधार लाने तथा इन क्षेत्रों की वर्तमान उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए नवीनता लाने की आवश्यकता है। किसान नवीन उन्नत तकनीकी के माध्यम से फसल उत्पादन को प्रभावित कर सकता है। उद्योगों में प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों की कार्यक्षमता का विस्तार करके उत्पादन मात्रा में वृद्धि कर सकते हैं। इसी प्रकार बैंकिग, व्यापार, निर्यात आदि क्षेत्रों में भी नवाचार अपनाकर उत्पादकता का विस्तार किया जा सकता है। जिस प्रकार से एक अच्छी काया भारीर की सुन्दरता को निखारती है, अच्छा व्यवहार व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है ठीक उसी प्रकार अच्छे रोजगार के लिए व्यक्ति का हुनरमंद होना आवश्यक है। कौशल विकास तथा रोजगार निश्चित रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, तथा एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

रोजगार के अभाव में व्यक्ति अन्य क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। प्रस्तुत शोध में कोशल विकास के व्यक्तियों के प्रवास पर प्रभाव का आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है

संदर्भ साहित्य का अवलोकन

अलेक्ज़ेंडर एवं होफमैन (2023) ने स्विट्ज़रलैंड में कौशल प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचार के बीच अंतर्संबंध का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके शोध में यह पाया गया कि उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल व्यक्तियों की तकनीकी दक्षता को बढ़ाते हैं, बल्कि नवाचार क्षमता और श्रम बाज़ार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भी सुनिश्चित करते हैं। अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि प्रशिक्षित श्रमिक नई तकनीकों को अपनाने में अधिक सक्षम होते हैं और उत्पादन प्रक्रियाओं में सुधार के माध्यम से कंपनियों की उत्पादकता बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त, शोध ने यह भी इंगित किया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उद्योग, शिक्षा, साझेदारी और व्यावहारिक अनुभव का समावेश नवाचार गतिविधियों की तीव्रता को बढ़ाता है। लेखक ने सुझाव दिया कि भविष्य में तकनीकी नवाचार और कौशल विकास को रणनीतिक रूप से जोड़कर राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मकता को मज़बूती दी जा सकती है।

मिलर एवं थॉम्पसन (2023) ने अमेरिका में कोविड 19 महामारी के बाद डिजिटल और स्वास्थ्य क्षेत्रों में कौशल आवश्यकताओं में आए परिवर्तन का अध्ययन किया। शोध में यह पाया गया कि महामारी ने रोजगार और कौशल मांग के पैटर्न को अचानक बदल दिया। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल प्रशिक्षण, स्वास्थ्य देखभाल और टेलीमेडिसिन में नए अवसर उत्पन्न हुए, जिससे युवाओं और श्रमिकों को इन क्षेत्रों में नवीन कौशल सीखने के लिए प्रेरित किया गया। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया है कि महामारी ने पारंपरिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सीमाओं को उजागर किया और डिजिटल सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य, कौशल में निवेश की आवश्यकता को बढ़ाया। निष्कर्ष यह है कि आपातकालीन परिस्थितियों में कौशल विकास नीतियों को लचीला, तकनीकी अनुकूल और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए, जिससे श्रमिकों की रोजगार स्थिरता और समाज की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

हेर्नान्देज़ एवं क्रूज़ (2023) ने स्पेन और पुर्तगाल में युवाओं और प्रवासी मज़दूरों के कौशल विकास पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। शोध में यह पाया गया कि प्रवासी समुदाय के युवा यदि कौशल प्रशिक्षण से वंचित रहते हैं तो वे स्थानीय श्रम बाज़ार में पिछड़ जाते हैं और अस्थायी या कम वेतन वाली नौकरियों तक सीमित रह जाते हैं। इसके विपरीत, प्रशिक्षित प्रवासी श्रमिक उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार में प्रवेश करते हैं और सामाजिक, आर्थिक समावेशन में सक्षम होते हैं। अध्ययन ने यह भी इंगित किया है कि कौशल प्रशिक्षण स्थानीय भाषा, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ के अनुरूप होना चाहिए, ताकि प्रवासी युवाओं की रोजगार संभावनाएँ और आत्मनिर्भरता दोनों बढ़ें। शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि नीति निर्माता और प्रशिक्षण संस्थान प्रवासी युवाओं के लिए विशेष कार्यक्रम विकसित करें और उन्हें मुख्यधारा के श्रम बाज़ार में सम्मिलित करने के उपाय करें।

रावत, प्रियंका (2021) ने राजस्थान के ग्रामीण महिला उद्यमियों पर कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का गहन अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं ने सिलाई, बुनाई, खाद्य प्रसंस्करण और हस्तशिल्प जैसी गतिविधियों में दक्षता प्राप्त की और स्थानीय बाजार में छोटे व्यवसाय स्थापित किए। इस प्रक्रिया से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लघु उद्योगों और स्वरोज़गार के अवसर बढ़े। अध्ययन में यह भी दर्शाया गया है कि प्रशिक्षण के साथ विपणन, बिक्री और वित्तीय प्रबंधन पर सहायता प्रदान करने से महिलाओं के व्यवसाय अधिक टिकाऊ और लाभकारी बने। रावत ने निष्कर्ष निकाला कि कौशल विकास न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन है, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण और ग्रामीण समुदायों में महिला भागीदारी बढ़ाने का भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

पांडे, ज्योति (2021) ने अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के युवाओं के कौशल विकास पर गहन शोध किया। अध्ययन में यह पाया गया कि प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ और उन्हें रोजगार के अवसरों तक पहुँच अधिक सुगमता से प्राप्त हुई। पांडे ने यह भी दर्शाया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्थानीय भाषाओं, सांस्कृतिक संदर्भ और उद्योग की वास्तविक आवश्यकताओं को शामिल करने से सफलता दर और सामाजिक लाभ दोनों में वृद्धि होती है। निष्कर्ष में उल्लेख किया गया कि कौशल विकास न केवल आर्थिक अवसर प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण में भी योगदान देता है।

शोध के उद्देश्य

- कौशल विकास से विभिन्न कौशल विकास पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित युवाओं के प्रवास में हुए परिवर्तन का विश्लेषण करना।
- रोजगार अवसरों में अभिवृद्धि हेतु सुझाव व नीति निदेशन करना।

परिकल्पनाः

- कौशल विकास से विभिन्न कौशल विकास पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित युवाओं के प्रवास में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में कौषल विकास का प्रवास पर अध्ययन करने हेतु राजस्थान राज्य का उद्देश्यपूर्वक चयन किया गया है। प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान राज्य 7 सम्भागों में विभक्त है। प्रस्तुत शोध हेतु हमने जयपुर सम्भाग का चयन उद्देश्यपूर्वक किया है क्योंकि जयपुर संभाग में अधिकांश जनसंख्या कृषि पर अपनी आजीविका हेतु निर्भर है। कृषि रहित व्यवसायों का अभाव है। यद्यपि सेवा क्षेत्र का पर्याप्त विकास हुआ है परन्तु कौशल के अभाव में लोगों की आय कम है। अतः व्यक्ति रोजगार की तलाश में अन्य क्षेत्रों में प्रवासरत रहते हैं।

सरकार द्वारा कौशल सृजन के उपायों एवं योजनाओं के प्रभावों का आंकलन तथा कौशल विकास के क्षेत्रों की पहचान करने हेतु हमने जयपुर सम्भाग का चयन किया है। जयपुर सम्भाग में पांच जिले यथा अलवर, जयपुर, दौसा, झुंझुनू एवं सीकर हैं। प्रस्तुत शोध हेतु हमने झुंझुनू जिले का चयन उद्देश्यपूर्वक किया है क्योंकि यह एक ग्रामीण क्षेत्र है जहां रोजगार के अवसरों का अभाव है एवं लोग रोजगार की तलाश में प्रवासरत रहते है।

कौशल निर्माण की योजनाओं का रोजगार सृजन एवं राज्य के सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभाव का आंकलन करने हेतु झुंझुनू जिले का चयन किया है। सूक्ष्म अध्ययन हेतु हमने झुंझुनू जिले की कुल 6 तहसीलों में से 3 तहसीलें यथा नवलगढ़, चिड़ावा एवं खेतड़ी का चयन यादृच्छिक रूप से किया है। प्रत्येक तहसील से हमने सरल यादृच्छिक पद्धति से 10 गांवों का चयन किया है जिससे कुल 30 गाँव चयनित हुए हैं।

प्रत्येक गांव में कौशल निर्माण से प्रभावित लोगों की सूची तैयार कर सरल यादृच्छिक पद्धति से हमने 10 उतरदाताओं का चयन किया है। इस प्रकार प्रतिदर्श आकार 30X10 = 300 लाभार्थी है।

प्रत्येक गांव से 10 उतरदाता अर्थात एक तहसील से 100 उतरदाता। प्रतिदर्श आकार 30X10 = 300

प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ो पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ो की प्राप्ति स्वयं शोधकर्ता द्वारा अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई है, वही द्वितीयक आंकड़ो की प्राप्ति राजस्थान एवं भारत सरकार के विभिन्न प्रकाशनों, अखबारों पत्र पत्रिकाओं से की गई है। झुंझुनू की सूचनाएं जिला सांख्यिकी रूपरेखा एवं अन्य जिला स्तरीय प्रकाशनों से की गई है। संकलित आंकड़ो का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों जैसे औसत, प्रतिशत, सहसम्बन्ध, प्रतीपगमन आदि द्वारा किया गया है।

कौशल विकास का प्रवास पर प्रभाव

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि अधिकांश व्यक्ति रोजगार की तलाश में नजदीकी अथवा सुदूर क्षेत्रों में प्रवासरत रहते है। कौशल विकास के फलस्वरूप उनके प्रवास में कमी आई है अथवा नहीं यह विवरण अग्र तालिका में प्रस्तुत है।

तलिका 1: कौशल विकास के पूर्व उत्तरदाताओं के प्रवास का विवरण

तहसील	प्रवासरत	गैर प्रवासरत	योग
नवलगढ़	65	35	100
खेतड़ी	60	40	100
चिड़ावा	55	45	100
योग	180	120	300

स्त्रोतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण

कौशल विकास के पूर्व उत्तरदाताओं के प्रवास का विवरण

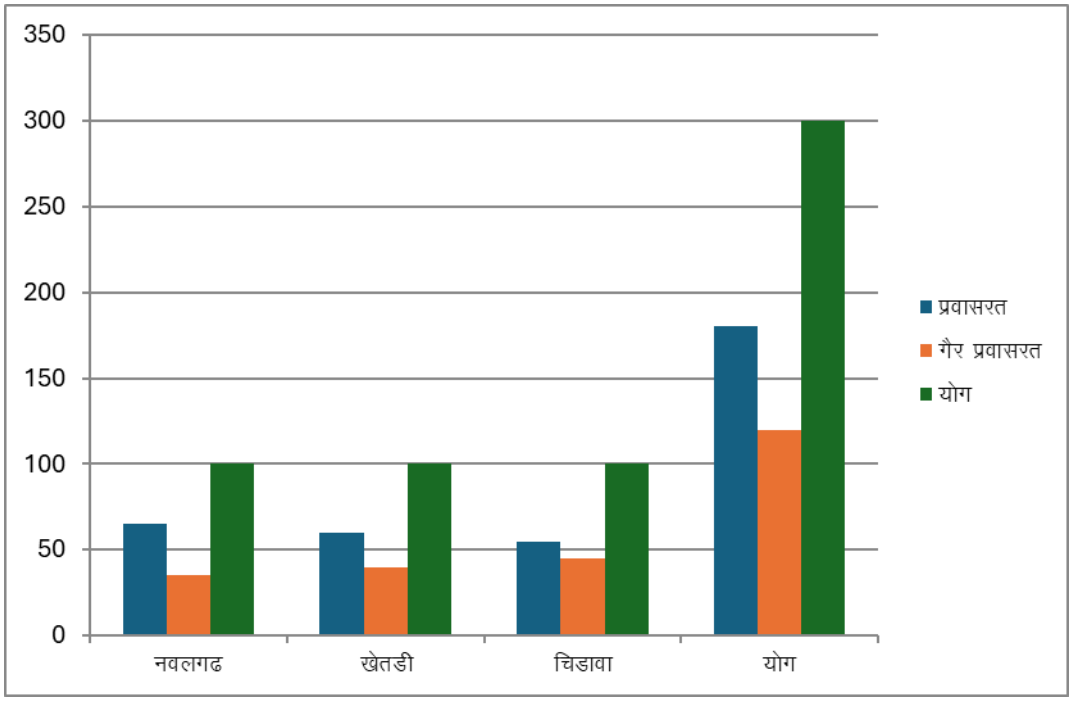

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट है कि कौशल विकास कार्यक्रम से पूर्व नवलगढ के 65 प्रतिशत, खेतड़ी में 60 प्रतिशत एवं चिड़ावा के 55 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवासरत थे। वहीं नवलगढ के शेष 35 प्रतिशत, खेतडी के 40 प्रतिशत एवं 45 प्रतिशत उत्तरदाता गैर प्रवासरत थे।

कुल 60 प्रतिशत उत्तरदाता कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने से पुर्व प्रवासरत थे वहीं शेष 40 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवासरत नहीं थे। निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि कौशल विकास प्रशिक्षण की प्राप्ति के पूर्व अधिकांश उत्तरदाता प्रवासरत थे।

कौशल विकास प्रशिक्षण की प्राप्ति के उपरान्त उत्तरदाताओं के प्रवास में आए परिवर्तन का विश्लेषण अग्र तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका 2: कौशल विकास के पश्चात् उत्तरदाताओं के प्रवास पर प्रभाव का विवरण

तहसील	प्रवासरत	गैर प्रवासरत	योग
नवलगढ़	5	95	100
खेतड़ी	10	90	100
चिड़ावा	2	98	100
योग	17	283	300

स्त्रोतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण

कौशल विकास के पश्चात् उत्तरदाताओं के प्रवास पर प्रभाव का विवरण

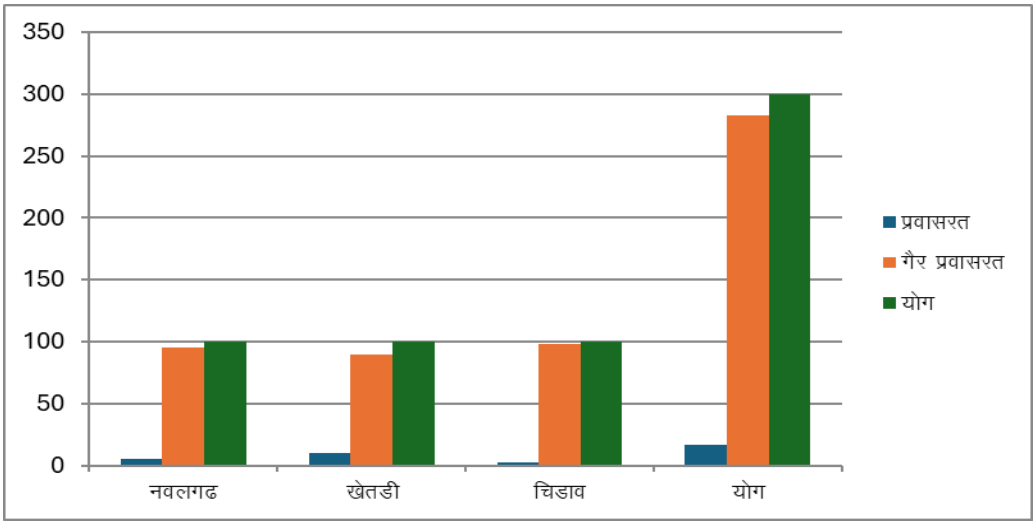

उपरोक्त तालिका एंव आरेख से स्पष्ट है कि कौशल विकास के पश्चात् नवलगढ के 5 प्रतिशत, खेतडी के 10 प्रतिशत एवं चिडावा के 2 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवासरत थे।

इसके विपरीत नवलगढ के 95 प्रतिशत, खेतडी के 90 प्रतिशत एवं चिड़ावा के 98 प्रतिशत उत्तरदाता कौशल प्रशिक्षण प्राप्ति के पश्चात् प्रवासरत नहीं थे।

कुल 6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवासरत थे वहीं शेष 94 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवासरत नहीं थे। निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि कौशल प्रशिक्षण की प्राप्ति के पश्चात् अधिकांश उत्तरदाता प्रवासरत नहीं थे।

अग्र तालिका में कौशल विकास के फलस्वरूप प्रवास में आयी कमी की सार्थकता के अध्ययन हेतु t परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका 3: कौशल विकास के फलस्वरूप प्रवास पर प्रभाव की सार्थकता जांच

मापदण्ड	कौशल प्रशिक्षण से पूर्व	कौशल प्रशिक्षण के पश्चात्
उत्तरदाताओं की संख्या (n) औसत	300	300
मानक विचलन	0.40	0.94
t समय	0.29	0.34
D.F.		8.20
P. मुल्य		598
निष्कर्ष		0.0025
		अस्वीकृत

स्त्रोतः आगणित

तालिका से स्पष्ट है कि कौशल प्रशिक्षण के पश्चात् प्रवास नही करने वाले उत्तरदाताओं का औसत 0. 40 से बढकर 0.94 हो गया है। स्पष्ट है कि कौशल विकास के फलस्वरूप रोजगार के अवसरों की स्थानीय स्तर पर प्राप्ति से प्रवास में कमी आयी है।

t परीक्षण का आंकलित मुल्य 8.20 है एवं प्रायिकता मुल्य 0.0025, सार्थकता स्तर (0.05) से कम है अतः शुन्य परिकल्पना गलत सिद्ध होती है एवं यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कौशल विकास से प्रवास में महत्वपूर्ण रूप से कमी हुई है।

सुझाव

- एग्रो–प्रोसेसिंग यूनिट्स का प्रशिक्षणः किसानों को केवल फसल उगाना नहीं, बल्कि उसकी 'ग्रेडिंग' और 'पैकेजिंग' सिखाना चाहिए। उदाहरण के लिए, संतरा उगाने वाले किसानों को संतरे का जूस या जैम बनाना सिखाया जाए तो उनकी आय कई गुना बढ़ सकती है ।
- गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में प्रोत्साहनः महिलाओं को सोलर इंजीनियर, इलेक्ट्रीशियन, ड्राइवर, और आईटी विशेषज्ञों के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ।
- सुरक्षित कार्य वातावरण और लचीलापनः प्रशिक्षण केंद्रों का समय ऐसा होना चाहिए कि महिलाएं अपने घरेलू कार्यों के साथ सामंजस्य बिठा सकें। साथ ही, कार्यस्थलों पर सुरक्षा और शिशु देखभाल की सुविधाएं सुनिश्चित की जानी चाहिए ।
- वित्तीय सहायताः प्रशिक्षित महिलाओं को अपना स्टार्टअप शुरू करने के लिए 'मुद्रा योजना' या राज्य स्तरीय विशेष सब्सिडी योजनाओं से जोड़ा जाना चाहिए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अलेक्ज़ेंडर, एफ., एवं होफमैन, एल. (2023). स्विट्ज़रलैंड में कौशल प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचार का अंतर्संबंध. Swiss Journal of Technical Education, 22(4), 201–219.
2. मिलर, के., एवं थॉम्पसन, ए. (2023). कोविड 19 के बाद अमेरिका में डिजिटल एवं स्वास्थ्य कौशल की मांग. Journal of Post&Pandemic Studis, 7(2), 55–73.
3. हेर्नान्देज़, आर., एवं क्रूज़, एम. (2023). स्पेन और पुर्तगाल में प्रवासी युवाओं का कौशल विकास और सामाजिक समावेशन. Iberian Journal of Migration Studies. 16(1), 34–50.
4. रावत, प्रियंका. (2021). ग्रामीण महिला उद्यमियों पर कौशल विकास कार्यक्रमों का प्रभावः राजस्थान का एक अध्ययन. Journal of Entrepreneurship and Development, 15(1), 54–72.
5. पांडे, ज्योति. (2021). अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के युवाओं के कौशल विकास का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव. Social Inclusion Review, 10(3), 101–119.
6. सिंह, विवेक. (2020). राजस्थान के युवाओं पर सूचना और डिजिटल तकनीक (ICT) प्रशिक्षण का प्रभाव. Digital Economy and Society Journal, 8(2), 65–82.
7. शर्मा, रितु. (2020). राजस्थान के महिला समूहों पर उद्यमिता प्रशिक्षण का प्रभाव. Journal of Women's Empowerment, 14(4), 99–118.
8. केदार, नितिन. (2020). राजस्थान में कृषि आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण. Indian Journal of Agricultural Economics, 75(3), 215–233.
9. जिला सांख्यिकी रिपोर्ट झुंझुनू।

❑❑❑